सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ
विद्यार्थी विकास मंडळ
SAVITRIBAI PHULE PUNE UNIVERSITY
BOARD OF STUDENTS DEVELOPMENT

युवा स्पंदन

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय का
प्रासंगिक एवं प्रायोगिक प्रकाशन
EXPERIMENTAL JOURNAL OF
SAVITRIBAI PHULE PUNE UNIVERSITY

अंक ५,
रविवार, दि. २३ दिसंबर, २०१८

अधिक जानकारी के लिए देखिए https://yuvaspandansppu.home.blog/

स्वरझंकार

रुक जाना नहीं, तू कहीं हार के...

मा. कुलपति की प्रतिभागियों को सलाह

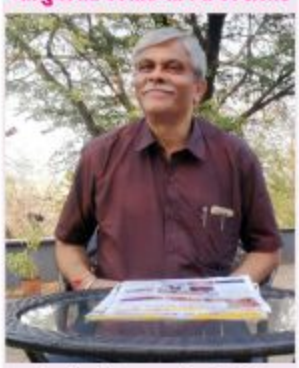

जयश्री पाटील, प्रणित जाधव, सिद्धार्थ म्हात्रे

कुलपति आवास : प्रतियोगिता की हर चीज को पुरस्कार से जोड़ना ठीक नहीं है। पुरस्कार न भी मिले तो भी अगला मौका जरूर मिलता है। विगत अनुभवों के आधार पर अपनी कमियों को दूरना और अपनी क्षमताओं को पूरा उपयोग करते हुए आगे बढ़ते रहना ही उचित होता है। 'युवास्पंदन' जैसे महोत्सवों का मंच इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। ये विचार सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. नितीन करमळकर ने शनिवार को व्यक्त किए। वे 'युवास्पंदन' के प्रतिनिधियों से बातचीत कर रहे थे।

'युवास्पंदन' अब अंतिम चरण में है। इस बहाने डॉ. करमळकर के साथ युवास्पंदन प्रतिनिधियों ने बातचीत की। इस अवसर पर कुलपति महोदय ने ऐसे कार्यक्रमों आयोजन के संदर्भ में विश्वविद्यालय की भूमिका, इसका छात्रों की दृष्टि से महत्व, विभिन्न कलाओं को प्रोत्साहन देने के लिए विश्वविद्यालय की योजनाएँ आदि के विषय में उन्होंने जानकारी दी।

(शेष पृष्ठ २ पर)

पुणे, संवाददाता : गिटार की स्ट्रमिंग हो, फड़कती दफली हो, मुख्य सभागार को कँपानेवाले ढोल की आवाजें हो या विश्वविद्यालय के मुख्य भवन में माऊथ आर्गन से आनेवाले मधुर सुर हों, ये सारी आवाजें अपनी सुरीली झंकारों से 'युवास्पंदन' के प्रतिभागियों के साथ-साथ दर्शकों में भी नया अहसास जगाते थे।

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय में 34 वें पश्चिम विभाग अंतरविश्वविद्यालय महोत्सव 'युवास्पंदन' के चौथे दिन कुछ ऐसा ही अनुभव रहा। बीते तीन दिनों से विश्वविद्यालय के माहौल को नई ताजगी दे रहा यह महोत्सव अपने अंतिम चरण में है। महोत्सव के चौथे दिन परंपरागत वाद्य, पाश्चिमी एकल वाद्य, एकल सुरवाद्य, मूकनाट्य, कोलाज और मेंहदी आदि प्रतियोगिताएँ संपन्न हुईं। शनिवार को सुबह पाश्चिमी वाद्य प्रतियोगिता में पाश्चिमी कला प्रकारों की शानदार प्रस्तुति हुई। संत ज्ञानेश्वर सभागार में संपन्न इस प्रतियोगिता में 11 प्रतिभागियों ने पाश्चिमी वाद्यों पर अपनी हुकूमत प्रस्तुत की। गिटार, कीबोर्ड, ड्रमसेट के वाद्यों के साथ प्रतियोगिता में माऊथ आर्गन, कझु, संक्सोफोन प्रतियोगिता की दौड़ भी दर्शकों ने देखी।

आज पुरस्कार वितरण

कुलपति डा. नितीन करमळकर के अध्यक्षता और भारतीय विश्वविद्यालय महासंघ के प्रतिनिधि प्रोफेसर सुरिंदर मोहन कांत की प्रमुख उपस्थिति में रविवार को महोत्सव का पुरस्कार वितरण समारंभ संपन्न होगा। यह समारोह प्रातः 11 बजे पु. ल. देशपांडे मुख्य सभागार में होगा।

सुरों से सने पंडित भीमसेन जोशी सुरमंच पर एकल सुरवाद्य प्रतियोगिता संपन्न हुई। संवादिनी से निकली सुरीली हंसध्वनि से प्रतियोगिता की शुरूआत हुई। तबले के साथ उसकी लय से क्रिडा कर रही झाले की ध्वनि ने वातावरण निर्मिति की। कुल 15 विश्वविद्यालयों के प्रतिभागियों ने इसमें सहभाग लिया। इनमें से कुछ प्रतिभागियों ने अपने वाद्यों के सुरों से दर्शकों को आनंदित कर दिया।

कृष्ण का वाद्य बांसुरी और उससे निकलने वाली सुरीली स्वरलवाली ध्वनि सुबह दस-ग्यारह बजे भी प्रभात का अनुभव करा रही थी। युवा महोत्सव के इतिहास में पहली बार हुई मेंहदी प्रतियोगिता में 13 प्रतिभागी सम्मिलित हुए थे। दुल्हन मेंहदी विषय पर प्रतिभागियों ने ढाई घंटे तक कलाकृतियाँ प्रस्तुत कीं। सुनील देशपांडे, शैलेश सिंग और आलोक भावसार आदि ने प्रतियोगिता के परीक्षण का दायित्व निभाया।

इस पत्रिका में छपी तस्वीरों का श्रेय:
सर्वश्री मयूर वाघ, कल्पेश नुक्ले, किरण गलगटे

प्रतियोगिताओं से मिलती है ऊर्जा

"प्रतियोगिताओं से एक अलग तरह की ऊर्जा मिलती है, फिर भी अधिकांश लोग उसी में जकड़कर रह जाते हैं। उससे बाहर आने के लिए,, प्रतियोगिताओं का अनिष्ट ढांचा तोड़ने के लिए 'युवास्पंदन' जैसे महोत्सव उपयुक्त होते है।" ऐसे विचार वरिष्ठ नाट्यलेखक मकरंद साठे ने शनिवार को व्यक्त किए।

'युवास्पंदन' के अंतर्गत 'कलाकार कट्टा' उपक्रम के अवसर पर साठे और फिल्म अभिनेत्री मुक्ता बर्वे विश्वविद्यालय में आये थे। 'युवास्पंदन के प्रतिनिधियों ने उनसे बातचीत की। इस बातचीत में इन दोनों ने विश्वविद्यालय के ललित कला केंद्र के साथ अपने रिश्ते, प्रतियोगिता और महोत्सव आयोजन की भूमिका आदि विषयों पर अपने विचार रखे।

साठेजी ने कहा, "पढ़ाई के दौरान मैं ऐसे महोत्सवों में सम्मिलित होता था। इससे अपने सीमित कलासंसार का भी अहसास होता। हम अपने सीमित वृत्त में विचरते समय हमारी उम्र के बाकी लोग क्या कर रहे हैं, यह भी समझ में आता था। ऐसे महोत्सवों से बहुत उत्साह मिलता है। विचारों की दिशा बदलती है। महोत्सव मे भारी संख्या में लोग एक साथ आने के कारण, प्रतियोगिताओं के गणित अपने आप बिगड़ते है। इसलिए ऐसी प्रतियोगिता, ऐसे संमेलन महत्वपूर्ण है।" युवास्पंदन के अवसर पर आज के युवाओं का उत्साह देखकर मन आनंदित हुआ, ऐसा साठेजी ने कहा। विश्वविद्यालय के माहौल के बारे में बर्वेजी ने कहा, "विश्वविद्यालय का मूलतः सुंदर परिवेश इस महोत्सव के कारण खिल उठा है। इस चैतन्यपूर्ण माहौल के कारण यह महोत्सव विश्वविद्यालय का एक उत्सव ही लग रहा है। इस अवसर पर मुझे विश्वविद्यालय में मेरा एडमिशन का दिन तथा विश्वविद्यालय से विदा होने का दिन याद आ रहा है।" यह महोत्सव छात्रों को एक मंच प्रदान करनेवाला है। कलाकार कट्टा के बहाने छात्र अपने मन के सवाल बेझिझक पूछ सकेंगे। इससे उनके मन के असल सवाल समझने में मदद मिलेगी, ऐसा विश्वास भी उन्होंने व्यक्त किया।

युवा अभिनेत्री मुक्ता बर्वे की छवी सेल्फी में उतारने का प्रयास करते हुए छात्र...

कलाकार

निलेश आंबरे

लालन सारंग नाट्यमंच: युवास्पंदन महोत्सव में शुक्रवार दोपहर को विश्वविद्यालय का नामदेव सभागृह दर्शकों से खचाखच भरा था। तालियों की गड़गड़ाहट, हर्षोल्लास, उत्साह और वन्स मोर के नारों से संपूर्ण सभागृह को हिला दिया। इस सत्र में विभिन्न विषय पर अनेक लघुनाट्य खेले गए। कुल 16 विश्वविद्यालयों इस प्रतियोगिता में सहभाग था।

आरक्षण, जातीयवाद, बेरोजगारी, व्हॉट्सअप का क्रेज, सामाजिक समस्याएँ, राजनीति धोखाधड़ी जैसे विभिन्न विषयों पर लघुनाट्य खेले गए। इसमे दर्शकों से अच्छा प्रतिसाद मिला। टीआरपी के पीछे भागने वाले सोशल मीडिया के बदलते मूल्यों पर लघुनाट्यों ने टिप्पणी की। पुलिस व्यवस्था कितनी खोखली है, इसे भी लघुनाट्य के माध्यम से दिखाया गया। महिलाओं पर बढ़ते अत्याचारों की तरफ ध्यान आकृष्ट करने के लिए महापुरुषों के विचार, संस्कृति में बढ़ते जा रहे कचरे को साफ करने और उसके माध्यम से देश निर्माण की आवश्यकता भी प्रतिभागियों ने लघुनाट्य के जरिए प्रस्तुत की।

विभिन्न प्रकार की वेशभूषा से लैस कलाकारों ने विडंबन और हास्य के माध्यम से प्रस्तुतिकरण करते समय समस्याओं की गंभीरता को कहीं भी कम नहीं होने दिया।

अलग अनुभव

सभी के लघुनाट्य वर्तमान समस्या को उजागर कर रहे थे। अगल-अलग अनुभव स्किट के माध्यम से सामने आए। आज इन समस्याओंके प्रति समाज में जागरूकता फैलाने की जरूरत है। -

कृष्णा तांदळे (दर्शक)

अन्नदाता सुखी भव...

भोजन प्रबंध पर अतिथि गण फिदा

अविनाश फुंदे

भोजन मंडप : "एकसाथ आए इतने सारे लोगों को खुश रखना वास्तव में एक बहुत मुश्किल काम है। परंतु युवास्पंदन महोत्सव के अवसर पर पुणे विश्वविद्यालय की भोजन व्यवस्था ने यह साबित कर दिखाया है।" - गौतम सोनवणे (औरंगाबाद)

"हमें यहां भोजन में वैविध्य देखने को मिला। विशेषत: चटनी, बेसन और बाजरे की रोटी बहुत पसंद आई। हमने अब तक कई सांस्कृतिक महोत्सव देखे हैं, लेकिन ऐसा आयोजन कहीं नहीं देखा गया।" - निष्ठा देसाई, जुनागढ़ विश्वविद्यालय। ये थी 'युवास्पंदन' की भोजन प्रणाली के बारे कुछ प्रतिनिधियों की प्रतिक्रियाएँ

'युवास्पंदन' महोत्सव की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होनेवाली भोजन व्यवस्था और उसकी समिति के प्रति महोत्सव में शामिल टीमों ने प्रसन्नता जताई। इस अवसर पर टीमों के प्रतिनिधियों ने 'अन्नदाता सुखी भव' जैसी प्रतिक्रियाएँ दी।

भोजन व्यवस्था के संबंध में समिति प्रमुख प्रो. सदानंद भोसले ने कहा, "मूल रूप से हमने समय-समय पर आनेवाले अतिथियों से जायजा लिया और व्यंजनों में विविधता लाने का प्रयास किया। एकसाथ हमने दो हजार लोगों की भोजन की व्यवस्था की है। हमने प्रतिभागियों के केवल भोजन की ही नहीं व्यवस्था नहीं की, बल्कि भोजन मंडप में कुछ सुविचार भी प्रदर्शित किए हैं। अगल-अगल भाषा के ये सुविचार प्रतिभागी और टीमों के प्रबंधकों को अत्यंत महत्वपूर्ण लगे हैं। हमारा प्रयास है कि थाली में जूठा भोजन न छूटे। इस उपक्रम का अच्छा असर दिख रहा है।"

भोजन व्यवस्था प्रतिभागियों के आवास के पास ही है। यहाँ दो वक्त के भोजन के साथ-साथ चाय और नाश्ता भी दिया जाता है। नाश्ते के व्यंजनों में विविधता है,। व्यंजनों में पुनरावृत्ति न हो, इसकी कोशिश की है। भोजन समिति का नियोजन प्रत्यक्ष में लाने की दृष्टि से विश्वविद्यालय के स्वयंसेवकों को बहुत अच्छी सहायता मिल रही है, जिसके लिए अतिथियों ने भी प्रशंसा की है। नांदेड की विजया खाखरे ने कहा, "भोजन मंडप के स्वयंसेवक से हमें बहुत ही सहायता मिली। इसलिए हमें कोई भी समस्या महसूस नहीं हुई। पदार्थों में विविधता एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।"

विश्वविद्यालय ने महोत्सव के लिए जो सुविधाएँ जुटाई हैं इसके लिए विश्वविद्यालय निश्चित ही प्रशंसा का पात्र है। हमें समय-समय पर मदद ही मिलती रही। हम पुणे में पहली बार आए हैं, लेकिन भविष्य में भी पुणे आने का मौका मिले तो प्रसन्नता ही होगी -ऐसी प्रतिक्रियाएँ खुशी उपप्रयाग, रवीना राव, मोनिका चतुर्वेदी, डॉ. दीनबंधु ठाकूर, सुनीता राव, डॉ. पाल टॅनहाई आदि ने व्यक्त कीं।

रुक जाना नहीं...

(पृष्ठ १ से)

'युवास्पंदन' की विशिष्टता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि, 'विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार ऐसा महोत्सव संपन्न हो रहा है। इसमें चार राज्यों के प्रतिभागी सम्मिलित हुए हैं। इस बहाने हो रहा सांस्कृतिक आदान-प्रदान छात्रों में उत्साह भरने का काम कर रहा है। 'कलाकार कट्टा' जैसे अभिनव कार्यक्रम के माध्यम से छात्रों को दिग्गज कलाकारों के साथ बातचीत कर उन कलाकारों को सटीकता से जानने का मौका मिल रहा है। इस उपक्रम की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि पुणे में संपन्न हो रहे इस महोत्सव के बहाने अवसर पर बाहर के अतिथियों को भी पुणे और महाराष्ट्र की संस्कृति जानने का अवसर मिला।

भविष्य में छात्रों के कला में कौशल को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय की ओर विभिन्न योजनाएँ लागू की जाएँगी। इस बारे में डॉ. करमळकर ने बताया कि 'विश्वविद्यालय के ललित केंद्र ने अब तक अनेक कलाकारों का निर्माण किया हैं। लेकिन वर्तमान में यह केंद्र जगह की कमी से जूझ रहा है। उनकी यह समस्या दूर करने में हम प्रयासरत है। साथ ही विश्वविद्यालय में लिबरल आर्टस कोर्स का पाठ्यक्रम प्रारंभ करने का प्रयास भी जारी है। दिनोंदिन तकनीक के बढ़ते प्रभाव के चलते कहीं न कहीं हम अपना वजूद खोते जा रहे है। मुझे लगता है, इस समस्या से निजात पाने के लिए सभी कलाओं को मंच प्रदान करना शैक्षिक संस्थानों का दायित्व है। इस दृष्टि से विश्वविद्यालय के स्तर पर हम प्रयास कर रहे है।' गोवा कला अकादमी, दिल्ली इंडिया हॅबिटॅट सेंटर जैसी वास्तुएँ निर्माण करने में विश्वविद्यालय की मदद मिलती है, तो वह निश्चित ही आनंददायी पहल साबित होगी।

उस समय नास्टेल्जिक हो जाते हैं....

इस अवसर पर डॉ. करमळकर ने अपनी चित्रकला की दिलचस्पी के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 'बचपन से ही हमारे घर में कलाप्रेम का माहौल था। कोल्हापूर में ही पला-बढ़ा होने कारण संस्कार भी वैसे ही मिले। पिताजी चाहते थे कि मैं आर्किटेक्ट बनूं। लेकिन आर्थिक स्थिति के कारण यह संभव नहीं हुआ। फिर तो पेंटिंग भी छूट गई। अब जब विश्वविद्यालय में अन्य कलाकार जब प्रकृति का, विश्वविद्यालय के मुख्य भवन का चित्र बनाते है, तब थोड़ा उदास हो जाता हूँ। इसलिए हमारे छात्रों को ऐसा मौका प्रदान करने के लिए हम विचार कर रहे हैं।

कलावंत कट्ट्यावर उमटले सिनेतरंग

सिद्धार्थ म्हात्रे, वृषारी केदार

ललित कला केंद्र अंगणमंच: युवास्पंदनच्या चौथ्या दिवशी शनिवार सकाळचा कलावंत कट्टा चित्रपट आणि नाट्यक्षेत्रातील मान्यवरांच्या उपस्थितीत रंगला. या निमित्ताने कलाक्षेत्रातील विविध मान्यवरांशी गप्पा मारण्याची संधी विद्यार्थ्यांना गेले तीन दिवस मिळले आहे.

ललित कला केंद्राच्या अंगण मंचावर सकाळच्या प्रसन्न वातावरणात गप्पांना सुरुवात झाली. त्यातून नाट्य व सिनेक्षेत्रातील तरंग मंचावर अलगद उमटत गेले. प्रारंभी मकरंद साठे यांनी आपले नाट्यक्षेत्रातील अनुभव मांडले. ते म्हणाले, 'नवे प्रयोग करताना इतिहासाचा अभ्यास असला तरच एखाद्या कलाकृतीवर आपल्याला नव्या उमेदीने काम करता येतं.' विचारस्वातंत्र्याबाबत एका प्रश्नाला उत्तर देताना ते म्हणाले, 'कौतुक करण्याला परवानगी आणि टीका करण्याला विरोध हे विचारस्वातंत्र्य होऊ शकत नाही.'

अभिनेत्री मुक्ता बर्वे ललित कला केंद्राच्या माजी विद्यार्थिनी आहेत. त्यावेळच्या आठवणींना त्यांनी उजाळा दिला. बर्वे म्हणाल्या, 'याच मंचावर मी नाटकाची सुरुवात केली आणि इथेच बसून अनेक दिग्गजांना आम्ही ऐकलं. तुमचं वय इतकं मस्त आहे की तुम्हाला जे हवंय ते तुम्ही मोकळेपणाने मांडायला हवं.' असेही त्यांनी विद्यार्थ्यांना सांगितले.

योगेश सोमण यांनीही विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले. संहिता चांगली असल्याशिवाय कुठलीही गोष्ट उभी राहत नाही. त्यामुळे आपल्या जगण्याला जे विषय जवळचे आहेत, त्यावर आपण अधिक चांगल्या प्रकारे काम करू शकतो, असे मत त्यांनी व्यक्त केले. विद्यार्थ्यांनी उत्स्फूर्तपणे विचारलेल्या प्रश्नांना मान्यवरांकडून अभ्यासू उत्तरे मिळाली. त्यामुळे गप्पा अधिकाधिक रंगत गेल्या. या वेळी प्र-कुलगुरू डॉ. एन. एस. उमराणी, कुलसचिव डॉ. प्रफुल्ल पवार आणि सिनेटच्या सदस्य बागेश्री मंठाळकर आदी उपस्थित होते.

नादखुळा!

मयूर बोरसे, रविंद्र माने, कार्तिक पुजारी

पु. ल. देशपांडे मुख्य सभामंच : कडकडांग.. कडकडांग.. धांगणंग.. टाकनंग.. हलग्या, कडं, ढोलक्या, डिमडी, मोठमोठ्या आकारांचे ढोल... कोणी मोठमोठे सूर वाजवत होते, तर कुठे सुपातील धान्याच्या नादाच्या जोडीने बहिणाबाईंच्या ओव्याही ऐकू येत होत्या. कुठे राजस्थानी खडतालीच्या साथीने सारंगीचा सूर लागत होता. अशा सगळ्या पेटलेल्या सांगितीक वातावरणात प्रेक्षकांनी टाळ्या, शिट्ट्यांनी आरोळ्यांनी दाद दिली नसती, तरच काय ते नवल.

'युवास्पंदन'च्या चौथ्या दिवशी शनिवारी पु. ल. देशपांडे सभामंडपात पारंपरिक वाद्ये आणि त्यांचा आविष्कार बघायला मिळाला. महोत्सवाच्या उत्तरार्धात झालेला हा कलाप्रकार इतकी ऊर्जा देणारा होता, की अवघ्या अर्ध्या तासात सभामंडप गच्च भरला. केवळ नऊ संघच स्पर्धेत उतरले असतानाही एकाहून एक सरस सादरीकरणे रसिकांसाठी एक नेत्रसुखद अनुभूतीच ठरली.

या स्पर्धेमध्ये प्रत्येक स्पर्धक संघाने जीव ओतून आपली कला सादर केली. त्या माध्यमातून स्पर्धकांनी प्रेक्षकांच्या मनोरंजनाच्या जोडीनेच विविध सांगितिक परंपरांचे दर्शनही घडविले. ढोल, ताशा, बासरी आदी पारंपरिक वाद्यांना जोडीला घेत स्पर्धकांनी श्रोत्यांच्या मनाचा ठाव घेतला. सोलापूर विद्यापीठ संघाच्या सादरीकरणाने स्पर्धेची सुरुवात झाली. राजस्थान आणि गुजरातच्या संघांनी आपल्या लोकसंगीताने श्रोत्यांची मने जिंकली. या संघांनी केलेल्या पारंपारिक वेषभूषाही लक्षवेधी ठरल्या. शिवाजी विद्यापीठाच्या स्पर्धकांच्या सादरीकरणांनी कार्यक्रमाची सांगता झाली. संपूर्ण कार्यक्रमादरम्यान श्रोत्यांच्या टाळ्या आणि शिट्ट्यांनी सभामंडप दणाणून गेला होता.

मुलीही ठरल्या सरस

पन्नासपेक्षा अधिक वेगवेगळ्या प्रकारची वाद्ये घेऊन रंगमंचावर आलेल्या एसएनडीटी महिला विद्यापीठाच्या विद्यार्थिनींनी आपल्या या वाद्यांचा योग्य समन्वय राखत समोर बसलेल्या रसिक श्रोत्यांना आपल्या तालावर नाचायला भाग पाडले. यामध्ये त्यांनी गजर, अभंग, देवीचा गोंधळ, यल्लमा देवीचे चौंडके, कोकणातला बाल्या संगीतप्रकार, शेतकरीगीत, लग्नसोहळा, वरात अशी वेगवेगळे संगीत प्रकार सादर करत रसिक श्रोत्यांना मंत्रमुग्ध केले.

ढोलकी झाली बोलकी...

वयाच्या सातव्या वर्षात पाहिलेल्या स्वप्नाला खऱ्या अर्थाने आज सत्याचे स्वरूप आले आहे अशी भावना विजय कापसे या सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाच्या विद्यार्थ्याने व्यक्त केली. घरी कसलीही वाद्य वाजवण्याची परंपरा नसताना त्याने वयाच्या सातव्या वर्षी संगीताच्या क्षेत्रात पाय ठेवला. सुरुवातीला फक्त तमाशा, लावणी, गवळणी ऐकून तो त्याप्रमाणे लय पकडण्याचा प्रयत्न करत असे. संगीतातले बारकावे समजू लागल्यानंतर तो ७० प्रकारची वेगवेगळी पारंपरिक वाद्ये लीलया वाजवितो. कृष्णा मुसळे आणि विजय चव्हाण हे मार्गदर्शक, तर ए. आर रेहमान आणि इलाई राजा हे प्रेरणास्रोत असल्याचे त्याने सांगितले.

मेहंदी है रंगने वाली...

वैष्णवी कारंजकर, निनाद भोंडे

बी.आर.खेडेकर रंगमंच : आंतरविद्यापीठीय युवक महोत्सवांच्या इतिहासात पहिल्यांदाच होत असलेल्या मेहंदी स्पर्धेने नाट्य- संगीत, साहित्य आणि ललित कलांच्या रंगात न्हाऊन निघालेल्या 'युवास्पंदन'ला शनिवारी एक नवा रंग दिला. स्पर्धेदरम्यानचा मेहंदीचा दरवळ हा प्रेक्षकांना धुंद करून टाकण्यास पुरेसा होताच. पण त्या जोडीने स्पर्धकांनी मेहंदीमधून साकारलेली कलाकुसरही प्रेक्षकांसाठी कौतुकाचा विषय ठरली. पहिल्यांदाच होत असलेल्या या स्पर्धेमध्ये १३ स्पर्धकांनी सहभाग नोंदविला होता. या स्पर्धकांनी 'दुल्हन मेहंदी' या मुख्य संकल्पनेवर आधारित विविध शैलींमधील मेहंदीच्या नक्षी सादर केल्या. सुनील देशपांडे, शैलेश सिंग आणि आलोक भावसार यांनी या स्पर्धेसाठी परीक्षक म्हणून काम पाहिले.

तालसुरांची गट्टी जमली...

मयूर बोरसे

पंडित भीमसेन जोशी स्वरमंच: स्वरांनी सजलेल्या पंडित भीमसेन जोशी स्वरमंचावर एकल स्वरवाद्य वादन ही स्पर्धा 'युवास्पंदन' मध्ये शनिवारी सकाळी पार पडली. हार्मोनियममधून निघालेल्या हंसध्वनी रागाच्या स्वरांनी त्याची सुरुवात झाली. तबल्याच्या साथीनं लयीशी खेळताना वाजवलेला झाला वातावरणनिर्मितीसाठी पुरेसा होता. एकूण १८ विद्यापीठांच्या कलाकार विद्यार्थ्यांनी सहभाग घेतलेल्या या स्पर्धेत काही दुर्मिळ वाद्यांचेही स्वर रसिकांना आनंद देऊन गेले. कृष्णाचं वाद्य असलेलं बासरी आणि त्यातून निघणारे खर्जातले स्वर सकाळच्या दुसऱ्या प्रहरातही मंगलमय पहाट उजाडण्याचा आभास निर्माण करणारे होते.

सरोद आणि सारंगीवर छेडलेली प्रत्येक तार ही दुर्मिळ वाद्ये आजही टिकून का आहेत, याचे उत्तर देत होती. 'भटियार' रागाने सुरुवात करून विलंबित लयीत रागाचा विस्तार करत करत वादक दोन स्वरांच्या मधल्या अंतरात एक छान, सुरेल मिंट घेऊन जात होता. या वेळी तरुणाईचा शास्त्रीय संगीताकडे बघण्याचा प्रयोगशील दृष्टिकोन सभागृहात अनुभवता आला. एरवी साथीसाठीच वापरलं जाणारं सारंगी हे वाद्य एकल वादनातही किती प्रभावी ठरतं याचा प्रत्यय या वेळी आला. खास गायकी अंगाने सादर केलेल्या वादनात कमालीची शिस्त आणि एकसंधता होती.

आजच्या तरुण पिढीसाठी विशेष आकर्षणाची गोष्ट असलेलं व्हायोलिन हे वाद्य तबल्याच्या साथीनं वादक असं काही फुलवत नेत होता की, येणाऱ्या प्रत्येक समेवर 'क्या बात है' हीच दाद ऐकू येत होती. विशेषत: तरुणांकडून. महोत्सवाच्या उत्तरार्धातला शनिवारचा दिवस हा खऱ्या अर्थाने वाद्यांनी आणि त्यांतून निघालेल्या स्वरांनी संस्मरणीय केला.

पंडित भीमसेन जोशी स्वरमंचावर शुक्रवारी शास्त्रीय, सुगम गायनानंतर तालवाद्यांचाही स्वतंत्र आविष्कार पहायला व ऐकायला मिळाला. एकल तालवाद्य वादन या स्पर्धेत एकूण २५ विद्यापीठांच्या स्पर्धकांनी सहभाग नोंदवला. तबला, पखवाज, ढोलकी, मृदंगम् यांसारखी पारंपरिक वाद्ये आणि त्यातून निघणाऱ्या नादाने सभागृह भरून गेले.

महाराष्ट्राबरोबरच राजस्थान, गुजरात, गोवा या राज्यांतील तरुण वादक मोठ्या शिताफीने सगळी वाद्ये हाताळत होते. तबल्यावर विविध घराण्यांचे कायदे, तुकडे, लग्गी वाजवून समेवर येताना त्यांच्या चेहऱ्यावरचा आनंद सुखद होता. पखवाजवर पहिला 'धा' पडला की स्वाभाविकच प्रेक्षकांचे कान आणि नजरा मंचाकडे वळाल्या आणि पुढे त्या वाद्याच्या असंख्य रागांनी त्यांना खिळवून ठेवले.

भारतीय व कर्नाटक शास्त्रीय संगीतात साथीला वापरल्या जाणाऱ्या वाद्यांचा त्यात प्रामुख्याने समावेश होता. स्पर्धक कलाकारांनी सादर केलेल्या वैविध्यपूर्ण वादनात त्यांची कलेबद्दलची निष्ठा, त्यांची मेहनत किती प्रामाणिक आहे याचा अंदाज लावता येईल. त्यांचं अवघडात न जाता सहज सोपं वादन रसिकांची रसिकांना भावणारे होते. सारंगी, हार्मोनियम यांसारख्या वाद्यांची साथ मिळाल्यावर त्यांचे वादन अजून फुलत होते.

जिंगल बेल्स

पाश्चिमात्य वाद्यवादन स्पर्धेत बहारदार सादरीकरण

मयूर गुंजाळ

आर. डी. बर्मन संगीतमंच : 'युवास्पंदन' महोत्सवामध्ये शनिवारी सकाळी पाश्चिमात्य वाद्यवादन स्पर्धेमध्ये सहभागींनी बहारदार सादरीकरण केले. त्यामुळे हा महोत्सव केवळ भारतीय कलाप्रकारांसाठीच नाही, तर पाश्चिमात्य कलाप्रकारांसाठीही तितक्याच ताकदीचे व्यासपीठ असल्याचे दिसून आले. ख्रिसमसच्या पार्श्वभूमीवर परदेशी विद्यार्थ्यांनी सादर केलेल्या जिंगल बेल्सने या स्पर्धेत उपस्थितांची वाहवा मिळविली.

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठाच्या मुख्य इमारतीमधील संत ज्ञानेश्वर सभागृहामध्ये ही स्पर्धा झाली. वेगवेगळ्या विद्यापीठांमधून आलेल्या ११ स्पर्धकांनी या स्पर्धेत पाश्चिमात्य वाद्यांवरील आपले प्रभुत्व सिद्ध केले. गिटार, की-बोर्ड, ड्रमसेट या नेहमीच्या वाद्यांच्या बरोबरीनेच या स्पर्धेत माऊथऑर्गन, कझू, सॅक्सोफोन अशा स्पर्धकांची कसोटी पाहणाऱ्या वाद्यांचे वादनही अनुभवायला मिळाले. कोल्हापूरच्या शिवाजी विद्यापीठाची प्रतिनिधी संज्योती जगदाळे हीने कझू या अफ्रिकन वाद्यावरील आपले कौशल्य उपस्थितांसमोर सादर केले. मुंबई विद्यापीठाच्या कीर्ती राव यानेही एकाच वेळी चार माऊथऑर्गन वाजवून प्रेषकांची वाहवा मिळवली. वनस्थली विद्यापीठाची युक्ती दिलावरी हीने ड्रमसेट वादनाने उपस्थितांची मनं जिंकली. स्पर्धेदरम्यान टायटॅनिक- रॅम्बोसारख्या सिनेमांच्या सिग्नेचर ट्यून्स, मारिओ व्हिडिओगेमचे पार्श्वसंगीत यांसह इतर काही संगीतप्रकारही ऐकायला मिळाल्या. कल्याण सेन, विल्फ्रेड वाझ आणि रोहीत नागभिडे यांनी या स्पर्धेचे परीक्षण केले. डॉ. चैतन्य कुंटे यांनी स्पर्धेचे समन्वयक म्हणून काम पाहिले.

तिरकस मूकाभिनय

निलेश आंबरे

ललित सारंग नाट्यमंच : "युवास्पंदन"च्या तिसऱ्या दिवशीच्या संध्याकाळच्या सत्रात ललित सारंग नाट्यगृह हे मूक अभिनयाच्या जल्लोषात प्रेक्षकांनी अगदी पूर्ण भरून गेले होते. आधी वेगवेगळ्या सामाजिक प्रश्नांचे विनोदी पद्धतीने, तरीही गांभीर्य कायम राखत प्रेक्षकांची मने जिंकली.

या स्पर्धेचे विशेष हे की, मूक अभिनयाच्या वैविध्यपूर्ण विषयांनी प्रेक्षकांना अक्षरश: खिळवून ठेवले. भारतीय सैन्य, वृक्षतोड, स्त्रियांवरील अत्याचार, या सारख्या विषयांना मूकअभिनयाद्वारे जमलेल्या प्रेक्षकांपर्यंत व परिक्षकांपर्यंत पोहचवण्याचा यशस्वी प्रयत्न स्पर्धकांनी केला. चौथ्या दिवशीच्या सकाळच्या सत्रात जे मूकअभिनय सादर झाले, ते सर्व आधुनिक युगातील मानवाच्या जीवनावर आधारित असेच होते. त्यांनी उपस्थितांना विचार करायला भाग पाडले.

वाढत्या तंत्रज्ञानाच्या ज्ञानाचा वेळीच उपयोग नाही केला, तर येणाऱ्या काळात यंत्रमानव हे माणसांना नष्ट करतील. आज जर पाण्याचा अपव्यय केला, तर भविष्यातील युद्ध हे पाण्यावरून होण्याचा धोका मूकअभिनयाद्वारे स्पर्धकांनी मांडला. त्यासोबतच मानवाने स्वत:च्या मनोरंजनासाठी प्राण्यांवर अन्याय चालवला आहे, याचेही स्पर्धकांनी सव्यंग सादरीकरण केले. दोन दिवसांत एकूण अठरा मूकअभिनय सादर करण्यात आले.

मुरब्बी रसिकांनी प्रेक्षागृह तुडुंब

मूकाभिनय हा मानवी भावनांचा मूक अविष्कार असतो. त्याला शब्दांची जोड नसते. याचा प्रेक्षकही तसा मर्यादितच. मात्र युवास्पंदन दरम्यान ही सर्वसाधारण गणिते मात्र मोडीत निघाली ती रसिक प्रेक्षकांच्या उपस्थितीने प्रेक्षकांनी मूक अभिनयाच्या सादरीकरणाला असा काही प्रतिसाद दिला की नामदेव सभागृहाच्या प्रेक्षागृहात उभे राहायलाही जागा अपुरी पडत होती. दर्दी रसिक-प्रेक्षकांनी मनमुराद दाद देत स्पर्धकांचा उत्साह वाढवला.

संपादक : प्रा. योगेश बोराटे, संज्ञापन व वृत्तपत्रविद्या विभाग, रानडे इन्स्टिट्यूट, पुणे - ४११ ००४. (हिंदी अनुवाद सहाय्य - डॉ. गोरख थोरात, जयराम गाडेकर, संदीप काळे)
मुद्रक/प्रकाशक : डॉ. प्रफुल्ल पवार, कुलसचिव, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे - ४११ ००७. मुद्रणस्थळ : सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ मुद्रणालय, गणेशखिंड, पुणे - ४११ ००७.